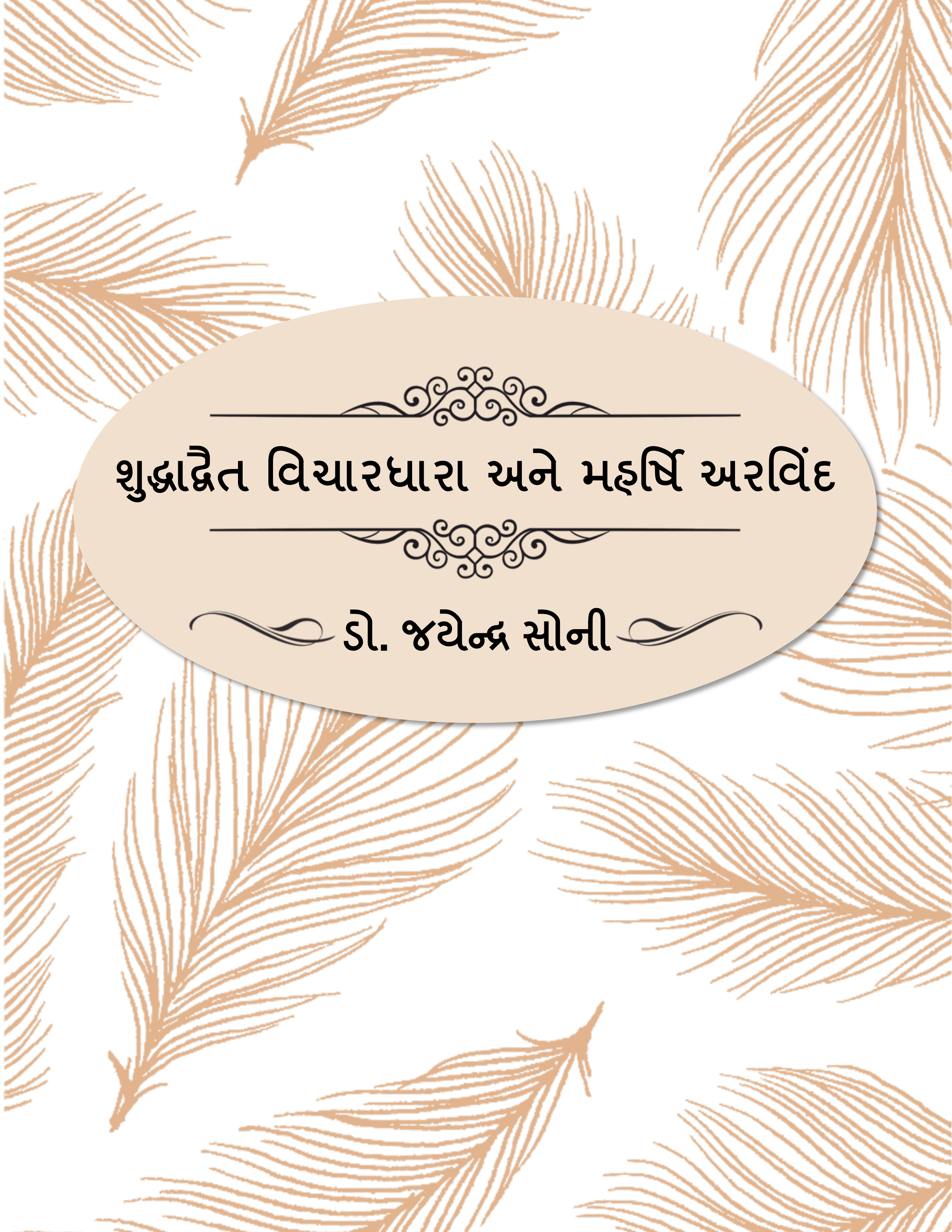

શુદ્ધાદ્વૈત વિચારધારા અને મહર્ષિ અરવિંદ

ડો. જયેન્દ્ર સોની

શુદ્ધાદ્વૈત વિચારધારા અને મહર્ષિ અરવિંદ

(*“શુદ્ધાદ્વૈત વિચારધારા અને મહર્ષિ અરવિંદ”* was one of Dr. Jayendrabhai Soni’s message segments which was delivered on mediums like Whatsapp groups and his Facebook account. Here is a collated document of all the messages related to this segment.)

⁎ "शुद्धाद्वैत विचारधारा अने महर्षि अरविंद" ⁎ (१)

****

पंदरमी शताब्दीमां प्रादुर्भूत भारतीय आचार्य परंपरा मां महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्यजीए वेद-गीता-ब्रह्मसूत्रो-भागवत'_'प्रमाण चतुष्टय' ना आधार पर 'शुद्धाद्वैत वेदांत' नी दार्शनिक विचारधारा' प्रस्तुत करी छे. तदंतर्गत तेमणे 'परम तत्त्व' (REALITY) ना 'सच्चिदानंद' स्वरुप ने ओळखावी जगतना सातत्यने प्रतिपादित कर्यु छे तेमज ते 'परम तत्त्व' 'श्रीकृष्ण' ने पामवाना साधन रुपे "पुष्टि भक्तिमार्ग" नुं प्रवर्तन कर्यु छे,

तेवीज रीते अर्वाचिन युगना महान भारतीय दार्शनिक महर्षि अरविंदे वेदोपनिषद-गीतादि शास्त्रो पर मौलिक चिंतन करी 'परम तत्त्व' (REALITY) ने पामवाना माटे 'पूर्णयोग' ऩी आगवी विचारधारा प्रस्तुत करी छे. तेमनो अनोखो ग्रंथ LIFE DEVINE वांचता तेमना विचारो मां शुद्धाद्वैत दर्शन नी साम्यता देखाई पडतां आ बन्ने युगपुरुषोनी दार्शनिक विचारधारा नो समन्वयात्मक अभ्यास करवा हुं प्रेरायो अने तेथी तेने में मारा 'पीएच डी' ना विषय तरीके मनोनित कर्यो.

उपसंहार मां मारुं निष्कर्ष ए छे के महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्यजीए पांच सैका पूर्वे प्रतिपादित करेल 'शुद्धाद्वैत विचारधारा' अने तदंतर्गत जगदीश अने जगत ना सातत्य अने तादात्म्य संबंध ने, अर्वाचिन युगना महान दार्शनिक महर्षि अरविंदे एज भारतीय भगवद् शास्त्रो ना आधारे स्वतंत्रतया अनुमोदन आप्यु छे. बीजी रीते महर्षि अरविंदे वर्तमान मां 'परम तत्त्व' / जगत विशे जे तात्त्विक विचारो प्रस्तुत कर्या छे ते श्रीवल्लभाचार्यजी वांचशो वर्ष पूर्वे प्रमाणित करी चुक्या छे.

आ बन्ने दार्शनिकोना चिंतन नी साम्यता ना केटलाक बिंदुओ ने प्रस्तुत करवानो मारो आ नम्र प्रयास छे. आशा छे सुग्यजनो तेने माणशे.

महर्षि अरविंद (१८७२-१९५०) विशे -

''

आ बंगाळी महानुभाव ने पिताए तेनामां भारतीय संस्कारोनो प्रभाव न पडे तेवी तकेदारी राखी इंग्लेंडमां भणाव्या. प्रतिभाशाळी ए युवकने वडोदरा ना महाराजाए पोताना एडीसी बनाव्या. स्वतंत्रता चळवळमां भाग लेतां जेलनी सजा भोगवी. दरम्यान संस्कृत नो अने वेदोपनिषद-गीता नो तलस्पर्शी अभ्यास करी तेना पर चिंतन कर्युं. पाछळ थी पोंडीचरीने पोतानी योगसाधनानुं कायमी स्थान बनावी अनेक आध्यात्मिक चिंतनात्मक लेखन / प्रकाशन कर्युं. पोंडीचरी उपरांत देश-विदेश मां तेमना अनेक केंद्रो कार्यरत छे. सावित्री, लाईफ डीवाईन, ईंटीग्रल योग, ईत्यादि अनेक मननीय आध्यात्मिक साहित्य तेमणे जगत ने आप्यु छे. तेमनी विचारधारा पर अनेक शोध निबंध लखाया छे. तेमना अने श्रीवल्लभाचार्यजी ना दार्शनिक विचारो नी साम्यता

ए उपरथी समजी शकाय के पु. गो श्री श्याममनोहरजी महाराजश्रीए एक प्रवचन मां कहेलुं के जो श्रीमहाप्रभुजी ने अंग्रेजी मां वांचवा होय तो महर्षि अरविंद नुं "Life Divine" वांचवुं जोईए. ..... क्रमशः..... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

* शुद्‌धाद्‌वैत विचारधारा अने महर्षि अरविंद" * (२)

****

*. शंकराचार्यजी नुं सुत्र छे -"ब्रह्म सत्य, जगन्मिथ्या, जीव ब्रह्मथी भिन्न ऩथी".

*तेओ 'निर्गुण-निराकार' ब्रह्म ने 'परब्रह्म', मुख्य कहे छे, 'सगुण-साकार' स्वरुपने 'अपर ब्रह्म', 'माया-विशिष्ट', गौण माने छे.

*. श्रीवल्लभाचार्यजी कहे छे "ब्रह्म अने जगत बन्ने सत्य छे, जीव ब्रह्म नो अंश छे, (स्वयं ब्रह्म नथी)". निबंध मां समजावे छे -"ब्रह्म 'सच्चिदानंद' स्वरुप व्यापक, अव्यय छे, सत्यादि सहस्त्र गुणो युक्त छे"(शा.प्र. ६५-६६). अर्थात् निर्गुण / सगुण निराकार / साकार उभय छे. (तेथी विरुद्‌धधर्माश्रयी कहे छे - एक साथे तेमां विपरित गुणो रहेला छे).प्राकृतिक गुण रहित अर्थमां ते 'निर्गुण' छे, परंतु ऐश्वर्यादि दिव्य अनंत गुण युक्त होवाथी, ते अर्थमां 'सगुण' छे.त तेमां रहेला "आनंद" तत्त्व ने कारणे ते 'साकार' छे. श्रीकृष्ण ने शंकराचार्यजी 'माया-विशिष्ट' ब्रह्म कहे छे, श्रीवल्लभाचार्यजी साक्षात् परब्रह्म माने छे.

*. Endorsing these views, AUROBINDO says - "Sagun Brahman and Nirgun Brahman are opposite to the mind but they reveal themselves to be complementaries, two side of same Truth. Nirgun means freedom of the Reality from determination in terms of qualities, not absolute negation of qualities. The fact is there is a transcendent mystery upholding both Saguna and Nirguna. This transcendent is what is called the Absolute, which cannot be determined, it is ineffable, indescribable."
(Talks on The Divine Life - page 5/6). (डॉ. जयेन्द्र सोनी).

* "शुद्‌धाद्‌वैत विचारधारा अने महर्षि अरविंद" (३) *

****

* शंकराचार्यजी श्रुति वचनो ने 'निर्गुण श्रुति' अने 'सगुण श्रुति' एम भेद पाडी ब्रह्म ना 'स्वरुप लक्षण'ना प्रतिपादन अने 'कार्य लक्षण'ना प्रतिपादन ना आधारे ब्रह्म ना 'पार्थमार्थीक' (Absolute - परब्रह्म) अने 'व्यवहारिक' (Subsidiary - अपरब्रह्म) स्वरुप ना भेद समजवे छे. श्रीवल्लभाचार्यजी श्रृतिना आ प्रकारना भेद स्वीकारता नथी. तेमना मते 'वेद' ने प्रमाण गण्यु होय तो तेने समग्र पणे, तेना वचनोने जेमना तेम (face value पर) स्वीकारवा जोईए. मनमानी रीते आपणे तेनुं अर्थघटन करी ब्रह्म ना आवा भेद पाडी शकीए नहीं .

* Endorsing these views AUROBINDO says - "There is a supreme Reality which is ineffable by mind-created speech. It is not knowable by mind, it is the Unknown.

But what is unknown need not be unknowable. It may not be knowable in the way of the logical intellect, but it may be known through other ways; by our spiritual being, by our Consciousness, in a different way than the way of mind. This Reality, what in Western philosophy is called the Absolute, determines itself to our consciousness by some fundamental truth of its being. What it is in itself, we can't say, that is why we call it the Absolute. But it lends itself to our experience, it determines itself to our consciousness.". (Talk on The Life Divine -p.12)

* कांईक आवोज उत्तर गोपीजनोए उद्धवजी ने आपेलो, ज्यारे तेओ तेमने 'निर्गुण-निराकार ब्रह्म' नो उपदेश आपी रह्या हतां ! गोपीजनोए तो प्रत्यक्ष प्रभु नो अनुभव कर्यो हतो! (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

* "शुद्धाद्वैत विचारधारा अने महर्षि अरविंद" (४) *

****

श्रीवल्लभाचार्यजी समजावे छे के 'सच्चिदानंद' ब्रह्म ने "हुं घणा रुपो धारण करी अनेकविधता प्रकट करुं" एवी सत्य कामना पोतानी बाबत मां थई. तेनी आवी ईच्छा ने कारणे ज तेमांथी ब्रह्मात्मिका असंख्य चेतना प्रकट थयी, अने ते बधी चेतनाओ सृष्टि ना आरंभमां ब्रह्म मां थी बहार नीकळी अने ब्रह्म ना ईच्छानुसार आकार रहित बनी गई. 'जेवीरीते अग्निमांथी तणखा झरे तेम 'सदंश'मां थी जड सृष्टि पण प्रकट थई, तथा 'सच्चिदानंद'ना आनंद अंशमांथी बधानी भितर रहेनार अंतर्यामि रुप प्रकट थया' (नि.शा.प्र. २७-२८).

अर्थात् उपनिषद वचन "एकोहं बहुस्याम प्रजायेय" मुजब अनेक रुप बनवा नी ईच्छा थी 'सच्चिदानंद' ब्रह्मे पोताना सदंश, चिदंश अने आनंदांश मां थी अनुक्रमे अनंत जड पदार्थो, जीवो तथा अंतर्यामि उत्पन्न कर्या.

Endorsing this view AUROBINDO says -"REALITY in its truth aspect reveals itself as absolute self-existance, self-awareness, self-delight _ Sat, Chit, Anand. This self existence further reveals itself when it moves into manifestation, in three statuses. The first term is the Self, what we call Atman. As self it supports all forms, movements...... The Reality that constitutes the individuality if a formation us called the Conscious Being or Purush or Spirit.....When it turns towards manifestation, it renders itself in three aspects -Self extstance, Self awareness, Self delight. and the existence poise of Self (जड पदार्थो), poise of Conscience Being or Purush (जीवात्मा), and poise of God or Ishwara, The Divine Being (अंतर्यामि).". (The Talk on The Life Divine -pg. 13).

* "शुद्धाद्वैत विचारधारा अने महर्षि अरविंद" (५) *

****

AND Sri AUROBINDO further elaborates saying - "When we say (साकार) Brahman, it is the Reality turned towards manifestation (सृष्टि रुपे आविर्भाव). When we speak of the 'Absolute', Reality in itself, they (शंकराचार्यजी) call it the 'Supreme Brahman' (परब्रह्म). This Brahman is the Omnipresent (सर्व-व्याप्त) Reality of the Upanishad.

Everything that exist in the universe, and that which we say does not exist, because can not cognise it, is Brahman. Brahman is spoken of as personal (साकर स्वरुप) and as impersonal (निराकार तत्त्व), as with form and without form (मुर्त अने अमुर्त - श्वेताश्वेतर उपनिषद), where seer exclaimes : "Thou art the woman and Thou art man ; Thou art a boy and Thou art again a young virgin ......Thou becomest born and the world is full of thy faces."

केटलुं साम्य ! आज वात श्रीवल्लभाचार्यजी निबंध मां कही रह्या छे - "ब्रह्मणः सर्व रुपत्वम् अवयुज्य निरुपित ने" (शा. प्र.६२), अर्थात् ब्रह्म 'सर्व रुप छे, परंतु तेनी सर्वरुपता्खंडित खंडित करी जीवरुप बतावावामां आवे छे. (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

* "शुद्धाद्वैत विचारधारा अने महर्षि अरविंद" (६) *

****

केटलाक मतवादी ब्रह्म ने परमार्थतः केवल, निर्धर्मक, निर्विशेष, निर्गुण, निराकार बतावे छे. परंतु श्रुति - स्मृति मां वर्णवेला ब्रह्म ना स्वाभाविक धर्मो ने नकारी सकता नथी, तेथी समजावे छे के निर्धर्मक ब्रह्म अनिर्वचनीय 'माया' वडे 'सधर्मक' देखाय छे. तेमना मते ब्रह्म मां सर्वग्यत्व, सर्वशक्तिमतत्व, कर्तुत्व खरेखरा नथी, माया द्वारा आरोपित छे.

श्रीवल्लभाचार्यजी ब्रह्मसूत्र -"उभयव्यपदेशात्त्वहिकुंडलवत्" (३.२.२७) ईत्यादि प्रमाणे ना आधारे ब्रह्म 'विरुद्ध धर्मो वाळु' छे एम माने छे. ब्रह्म नुं माहात्म्य ज एवुं छे जे जाणी शकातुं नथी, ते सर्व करवाने समर्थ छे. जेम सर्व सीधो होय छे तेम कुंडाळा रुप पण होय छे. श्रुति पण ब्रह्म ने अणुं थी नामो अने महान थी महान बतावे छे, तेवा अनेक विधान करे छे. ते सगुण - निर्गुण, साकार - निराकार एम 'विरुदधधैर्याश्रयी' छे.

Endorsing these views Sri AUROBINDO says -"He is both Existent and state of existence. We call the state of existence the Impersonal Brahman, the Existent the Personal Brahman. There is no difference between them except the play of our consciousness, for every Impersonal state depends upon a menifest or secret Personality and can reveal the Personality which it holds and the veils and every Personality attaches to itself and can into Impersonal existence. This they can do because Personality and Impersonality are merely different state of self-consciousness in one Absolute Being". He further elaborates ......to be contd. (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

* "शुद्धाद्वैत विचारधारा अने महर्षि अरविंद" (७) *

****

AND Sri AUROBINDO explains - "God is that which is the All and yet exeeds and transcends the All, there is nothing in existence which is not God, but God is neither the sum of existence not anything in that sum, except symbolically, in image to His own Consciousness".

He further adds - "Every state of existence has some force in it which drives it to transcend itself. Matter moves towards becoming life, Life travels towards becoming Mind. Mind aspires towards becoming Divine and infinite Spirit. The reason is that every symbols, being a partial expression of God, reaches out to and seeks to become its own entire Reality; it aspires to become its real self by transcending its self".

श्रीवल्लभाचार्यजी ना "ब्रह्मवाद" नी विचारधारा नुं मूळ पण आ तथ्य ज छे. उपनिषद कहे छे - "जे बधा भौतिक पदार्थो मां स्थित छे, जे बधा पदार्थो नी भीतर छे, जेने कोई भौतिक पदार्थ जाणी नथी शकतुं - बधा भौतिक पदार्थो जेना शरीर नी माफक छे - जे बधा भौतिक पदार्थो नुं नियमन तेनी भीतर रहीने करे छे, ते आत्मा तमारी अंदर पण अंतर्यामि अमृत छे".

'रुगवेद' (पु.सु) पण कहे छे -"तेनी एटली तो महिमा छे अन्यथा ते पुरुष तो तेनाथी घणो अधिक छे, केमके ते चार चरणवाळा पुरुष ना एक चरण मां ते समग्र विश्व समायेल छे, अने त्रण अमृत चरण तो द्युलोकमां छे.

श्रीमहाप्रभुजी ना मते सृष्टिमें जे पण विभिन्न रुप-नाम-कर्म द्वारा अस्तित्व धरावे छे ते मात्र ब्रह्म ज छे.

आम श्रीअरविंदनी दार्शनिक विचारधारा संपुर्ण पणे श्रीवल्लभाचार्यजी नी ब्रह्मवादी विचारधारा ने अनुमोदित करे छे. (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

* "शुद्धाद्वैत विचारधारा अने महर्षि अरविंद" (८) *

****

'ब्रह्म' विशे श्रुति वचन छे - "एकमेवाद्वितियम्", ते एक मात्र अने अद्वितिय छे. आ वाक्य ज श्रीमहाप्रभुजी ना 'ब्रह्म'वाद' नुं बीज छे. श्री अरविंद आज वात नुं पोताना शब्दो मां निरुपण करतां कहे छे -

"An Omnipresent Reality is the truth of all life and existence whether absolute or relative, whether corporeal (मूर्त) or incorporeal (अमूर्त), whether animate (ज़िवंत / द्रश्य) or inanimate (निर्जिव / अद्दश्य), whether intelligent or unintelligent ; and in all its infinitely varying and even constantly opposed self-expression, (विरुद्धधर्माश्रयी), from the contradictions nearest to our ordinary experience to those remotest antinomies which

lose themselves on the verge of the Ineffable (अवर्णनिय), the Reality is one and not a sum of concourse (असंख्य) from that all variations begin, and in that all variations consist, to that all variations returns. All affirmations are denied only to lead to a wider affirmation of the same Reality. All antinomies confront each other in order to recognise one Truth in their opposed aspects and embrace by the way of conflict their mutual Unity. Brahman is the Alpha and Omega. Brahman is tha One besides whom there is nothing else existent." (The Life Divine - P. 38).

अर्थात् - "मूर्त के अमूर्त सर्जन नी पाछळ एकमात्र अनन्य 'ब्रह्म तत्व' विलसी रह्युं छे. संवाद के विवाद धरावता दृश्य / अदृश्य घटको केवळ ब्रह्म मां थी प्रादुर्भूत थाय छे, अने एमां ज लय पामे छे. आ परम तत्व ब्रह्म, जेनी व्याख्या थईशके तेम नथी, तेने पामवाना आपणे अगणित अनुभवो मां थी पसार थवुं पडे छे. तेनी व्याख्या करतां श्रुतिओ पण नेति-नेति कहे छे. आपणा अस्तित्व नी तथा आपणी चेतना ना विविध भूमिकाओ मां भिन्न भिन्न शक्ति प्रवाह के स्वरुपो द्वारा विलसी रहेल ब्रह्म तत्त्व नी बाबत मां आपणा मन-ईन्द्रियो अन्यथा कंई पण कहेवा असमर्थ छे. आ अविभाज्य ब्रह्म ने पामवाना आशयथी कोईपण स्वरुपने पकडी यात्रा नो आरंभ करीए तो पण ते कठीन छे केमके ते सर्वांगी होवी जरुरी छे (सर्वदा सर्व भावेन). ब्रह्म 'सर्व कांई (Alpha & Omega) ,छे. तेना सिवाय कशानुं अस्तित्व नथी".

श्रीमहाप्रभुजी कहे छे - "ब्रह्मणः सर्व रुपत्वम्". (नि. शा.प्र) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

* "शुद्धाद्वैत विचारधारा अने महर्षि अरविंद" (९) *

****

रुग्वेद नी रुचा कहे छे - "एकं सत् विप्राः बहुधा वदंति", अर्थात् - 'परम तत्त्व' एकज (श्रुति वचन - "एकमेवाद्वितियम्" अनुसार) छे, परंतु विद्वानो तेनुं जुदी जुदी रीते वर्णन करे छे. (तेथी अलग अलग विचारधाराओ / धर्मो तेने विभिन्न रीते संबोधे छे). श्रीवल्लभाचार्यजी ना मतानुसार 'शब्द ब्रह्म' रुप वाणी मात्र ब्रह्म नुं ज निरुपण करे छे. तदर्थ तद्विषयक विभिन्न मतानुसार 'परम तत्त्व' नी जे पण व्याख्याओ करवामां आवी छे, ते ब्रह्म ने अनुलक्षीने ज होय, अन्यथा नहीं. जेम कोई अंध व्यक्ति हाथी नुं वर्णन तेना विविध अंगोना अनुभव ना आधारे करे छे तेवी आ वात छे. तेमां खोटुं कोई नथी होतुं पण ते अर्धसत्य होय छे, संपुर्ण हकिकत नहीं. तेवीज रीते प्रत्येक मत ब्रह्म ना कोई एक पासानुं वर्णन करे छे, संपुर्णतया नहीं. तेथी श्रीवल्लभाचार्यजी निबंध (शा. प्र.७०) मां स्पष्टपणे कहे छे - "सर्व वादानवसरम् नाना वादानुरोधित", अर्थात् - 'ब्रह्म एवुं तत्त्व छे जे बधा मतने अनुसरे छे, परंतु तेने कोई एक व्यख्यामां सीमित करी शकाय नहीं'.

Endorsing these views, Sri AUROBINDO says - "Philosophies and Religions dispute about the priority of different aspects of God and different Yogins, Rishis and Saints have preferred this or that philosophy or religion. Our business is not to dispute about any of them, but to realise and become all of them, not to follow after any aspect to the exclusion of the rest, but embrace God in all His aspect and beyond aspect".

Sri AUROBINDO further adds - "The opinions of thinkers and Saints and Avtars should be accepted as hints but not the letters. What matters to you is what you have seen or what God is in His universal personility or impersonility or again personally in some teacher or Guru or path-finder undertakes to show to you by particular Sadhana".

आपणे जोई शकीए छीए के केटलुं साम्य छे !

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

* "शुद्धाद्वैत विचारधारा अने महर्षि अरविंद" (१०) *

****

श्रीवल्लभाचार्यजी द्वारा प्रतिपादित 'ब्रह्मवाद' नो एक आधार 'विरुद्ध धर्माश्रयतावाद' छे. तेओ समजावे छे के शास्त्रो मां जे प्रकारे निरुपण करवामां आव्युं छे, तेवा ज ब्रह्म नो स्वीकार करवो न्यायपूर्ण छे. परस्पर विरुद्ध विधानो द्वारा ब्रह्म मां विभिन्न विरुद्ध धर्मो विशे विधान मलता होय (जे अनेक श्रुति वचनो मां जोवा मळे छे), तो ब्रह्म ने विरुद्ध धर्मो नो आश्रय मानवुं उचित गणाय.

श्रीशंकराचार्यजी विभिन्न श्रुति-वचनोना 'निर्गुण श्रुति' अने 'सगुण श्रुति' एम भेद पाडी 'परब्रह्म' अने 'अपरब्रह्म' ('माया-विशिष्ट') एवा अर्थ तारवे छे तेनी साथे श्रीवल्लभाचार्यजी सहमत नथी.

तेओ अणुभाष्य (१.१.१) मां खुलासो करे छे के पोतानी बुद्धि थी वेदार्थनी परिकल्पना करी वैदिक तत्त्व नो विचार करवो संभव नथी. वेदांत थी ब्रह्मनुं जेवुं स्वरुप अवगत थतुं होय, तेनुंज तेने मानवुं जोईए, अणुमात्र पण तेमां विपरित कल्पना करवो ते दोषरुप छे.

Endorsing these views Sri AUROBINDO says - "REALITY is integral in nature of which 'The one and many', 'The finite and the infinite', 'The silence and dinemism', and 'The Being and Becoming' are different poses. Reality, therefor, logically and necessarily, requires an integral knowledge to have the complete knowledge thereof".

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

* "शुद्धाद्वैत विचारधारा अने महर्षि अरविंद (११) *

****

AND Sri AUROBINDO adds - "Parmatman being Absolute,is not subject to logic, for logic applies only to the determinate. We talk confusion if we say that the Absolute can not manifest the determinate and therefore the universe is false or non-existent. The nature of the Absolute is that we do not know what it is or is not, what it can do or can not do it that its Absoluteness is limited by any kind of impotency".

He further adds -"We experience spirituality that when go beyond everything else we come to something Absolute ; we experience spirituality that universe is in nature of manifestation proceeding as it were, from the Absolute ; but all these words and phrases are merely intellectual terms trying to express the inexpressible. We must state what we see as best as we can, but need not dispute what others see or state ; rather we must and locate and account for what they have seen or stated".

अगाउ जोयुं तेम ब्रह्म विशे ना विविध मंतव्यो सौना पोताना दृष्टिकोण थी निरुपण करवामां आवेला होवाथी साचा-खोटानो विवाद न होइ शके, कारण के ब्रह्मसूत्र "सर्व धर्मोपपत्तेश्च" (२.१.३७) प्रमाणे ब्रह्म मां सर्व धर्मो रहेला छे. तदुपरांत श्रीवल्लभाचार्यजी निबंध (शा.प्र ७०) मां कहे छे तेम - "ते सर्वत्र सर्व नी भीतर अने बहार अवस्थित रहेवा छतां कोई पण वस्तु ने ते स्पर्शता नथी. भीतर रहेवानो लीधे तेना शरीर जेवा पण तेनुं भीतर मां रही कोण प्रकाशे छे ते जाणी शकता नथी. अने तेथीज उमेरे छे के ते कोई वादनी सीमा मां बंधाई शके ऩही छतां बधा ज मत ते ब्रह्म विशे ज छे, तेवुं विलक्षण ते तत्त्व छे. भागवत (१०.६२) पण कहे छे - "ज्यां, जेना थकी, जेनाथी, जेनुं, जे ते प्रयोजन वश, जेना माटे, जे कांई, 'जेवीरीते ज्यारे थाय छे, ते बधुं पोते भगवान ज साक्षात् बनता होय छे. (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

* "शुद्धाद्वैत विचारधारा अने महर्षि अरविंद" (१२) *

****

तैत्तिरीय उपनिषद कहे छे - "तत्सृष्टवा तदेवानुप्रविशत्, तदनुप्रविश्य सच्च तच्चाभवत्, निरुक्तं चानिरुक्तं च, निलयनं चानिलयनं च, विग्यान चाविग्यानं च, सत्यं चानृतं च सत्यमभवेत्" (२.६.१)

अर्थात् - 'तेने उत्पन्न करीने पछी तेमां तेणे प्रवेश कर्यो. प्रवेश करीने पछी सत्य रुप पोते ज मूर्त अने अमूर्त रुपे - एटले प्रत्यक्ष तथा परोक्ष रुपे, कहेवा योग्य के नहीं कहेवा योग्य रुपे, आश्रय के अनाश्रय रुपे, चेतन के अचेतन रुपे, सत्य अने असत्य रुपे अने जे कांई आवे छे ते बधा रुपे ते बन्यो छे'.

श्रीवल्लभाचार्यजी निबंध (शा.प्र.२६) मां कहे छे - "अनंतमूर्ति तद् ब्रह्म हि अविभक्तं विभक्तमत्" -अर्थात् 'हुं घणा बधाना रुपो धारण करी अनेक विधान प्रकट करुं, एवी सत्य कामना थतां ब्रह्म ज पोते अनंत मूर्त रुपे ने धारण करीने अनंत विभागोमां अविभक्त बनी गयो छे'.

आ ज हकिकत ने महर्षि अरविंद केटली सचोट रुपे अभिव्यक्त करे छे!

Sri AUROBINDO says - "Parbrahman being the Absolute is indescribable by any name or definite conception. It is not Being or Non-Being, but something of which Being and Non-Being are primary symbols ; not Atman or unAtman or Maya ; not Personality or Impersonility ; nor Quantity or Non Quality, nor Consciousness or Non-Consciousness ; not Bliss or Non-Bliss ; not Purush or Or Pakruti ; not God nor man nor animal ; not release nor bondage ; but something of which, all these primary or derivative, general or particular symbols apply. Still, when we say that Parbrahman is not this or that, we mean that symbols or any sum of symbols ; in a sence Parbrahman is all these and All is Parbrahman. There is nothing else which all this can be". (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

∗ "शुद्धाद्वैत विचारधारा अने महर्षि अरविंद" (१३) ∗

****

To highlight this fact Sri AUROBINDO explains further that "We see that the Absolute , the Self, the Divine, the Spirit, The Being is One ; Transcendental is One, the Cosmic is One ; but we see also that beings are many and each has a self, a spirit, a like but different nature. And since the Spirit and essence of things is one, we are obliged to admit that all these many must be that One, and it follows that the One is or has become many ; but how can the limited or relative be the Absolute and how can man or beast or bird be the Divine Being ?"

"But", AUROBINDO adds, "in erecting this apparent contradiction the mind makes a doble error. It is thinking in terms of mathematical finite unit which is sole in limitation, but this is an infinite Oneness, which include astronomical - limitless numbers, which cannot exceed that Oneness of Brahman..." (The Life Divine - P.350).

अर्थात् - "ब्रह्म, आत्मा, दिव्यता, परात्पर चैतन्य का वैश्विकता ए बधुं एकज छे, छतां बीजी ए वात पण साची छे के द्रश्यमान अस्तित्व, जेनो आपणने बोध थाय छे, ते दरेकने पोतानो आत्मा छे, प्रत्येक नो स्वभाव जुदो जुदो छे. आपणे एम मानवुं जोईए के 'परम तत्त्व' पोते अनेक रुपे प्रकट थयेल छे. परंतु प्रश्न ए थाय के मर्यादित के सापेक्ष बनेल अस्तित्व ने ब्रह्म केवी रीते मानी शकाय, अथवा मानव, पशु, पक्षी दिव्य तत्त्व केवी रीते होई शके ? आपणुं मन आ देखितो विरोधाभास विशे बे भुलो करे छे. मन आ अस्तित्व ने गणितनी द्रष्टि विचारे छे. परंतु आ ऐक्यमां एवी एकता छे जेमां करोडो अबजो एकमो समजाववा छतां तेनी एकतानो पार पामी शकाय नही"

उपनिषद तेथी ज तो कहे छे "सत्यं ग्यानं अनंतं ब्रह्म" (तै. उ. २.१.१). श्रीवल्लभाचार्यजीए पण एकतामां विद्यमान अनेकताने विविध वचनो थी समजावी छे.

महर्षि अरविंदे आ तथ्य ने खुब विस्तार पूर्वक समझाव्यु छे. (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

∗ "शुद्धाद्वैत विचारधारा अने महर्षि अरविंद" (१४) ∗

****

श्रीवल्लभाचार्यजी नी शुद्धाद्वैत विचारधारा अनुसार ब्रह्म नी एकता मां अनुभवाती अनेकता - "रुप नाम विभेदेन जगत क्रीडती यो यतः", नो खुलासो करतां महर्षि अरविंद कहे छे - "It becomes very clear from various considerations that the coexistence of the Infinite and the finite, which is the very nature of universal being, is not a juxtaposition or mutual inclusion of two opposites, but as natural and inevitable as the relation of the principal Light and Fire withe suns. The finite is a frontal aspect and a self-determination of the the Infinite ; no finite can exist in itself and by itself, it exists by the Infinite and because it is of one essence with the Infinite. For, by Infinite, we do not mean solely an illimitable self-existance in Space and time, but something that is also spaceless and timeless, a self-existent Indefinable and Illimitable which can express itself in the Infinite single as well as in vast, in a second of time ; in a point of space, in a passing circumstance." (The Life Divine pg. 353).

अर्थात् - "आ परथी स्पष्ट समजी शकाय छे के अनंतता अने सीमितता नुं सहअस्तित्व ए बे अलग वस्तुओना सह -अस्तित्व जेवुं के परस्पर मेळाप होय तेवुं नथी. परंतु सूर्य मां जेम प्रकाश अने अग्नि एक रुपे रहेला छे एम ए बन्ने अभिन्न रुपे रहेला छे. सीमितता अनंततानी सपाटी परनुं होई, ते तेनो आत्म-निर्देश ज (self expression) छे. सीमितता के मर्यादितता नुं कोई स्वतंत्र अस्तित्व नथी. अनंतता दिग् काल मां व्याप्त (परिच्छिन्न) होवा उपरांत ए बन्ने थी पर (अपरिच्छिन्न) पण छे. ए "महतो महीयान् अणोः अणुयान्" छे. मर्यादीतता ने अविभक्त नो अंश गणवामां आवे छे. परंतु एवुं नथी कारण के ए प्रकार नो भेद देखाव मात्र छे. ज्यारे आपणे वृक्ष के अन्य पदार्थना बाह्य स्वरुपने बदले एना अंतरतम तत्व सामे जोईए तो जणाशे के ए बन्ने एकज वास्तविकता के अनंततानी रुपो छे. उपनिषद कहे छे तेम "पूण्णमिदं......पूर्णमेवावशिष्यते", एकतामां थी अनेकता पेदा थाय छे छतां अनेकतामां एकता समाहित छे. अनंतता नो तर्क आपणा मनने समजातो नथी कारण के अनंत मर्यादित घटनाओ थी पर नी बाबत छे. अनंतता मां नाम, रुप, गति, अगति वगेरेने क्यांय भिन्न स्थान नथी". So beautifully he has explained ! (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

* "शुद्धाद्वैत विचारधारा अने महर्षि अरविंद" (१५) *

****

श्रीवल्लभाचार्यजी द्वारा प्रतिपादित श्रुति वचन "एकमेवाद्वितियम्" अनुसार एक मात्र ब्रह्म नी एकता मां अनेकता नी वास्तविकता, अपरिच्छिन्न - अविभक्तं होवा छतां जगत रुपे परिच्छिन्न - विभक्त देखावा नी हकिकत ने अनुमोदित करतां महर्षि अरविंद समजावे छे के -

"The Self becomes insects and bird and beast and man, but it is always the same Self through these mutations because it is the One who manifest Himself infinitely in endless diversity. Our surface reason is prone to conclude that the diversity may be unreal, an appearance only (As mayavadins believe), but if we look a little deeper we shall see that a real diversity brings out the real Unity, shows it as it were in its utmost capacity , reveals all that it can be and is in itself, delivers from its whiteness of the hue the many times of colour that are fused together there ; Oneness finds itself infinitely in what seems to us to be falling away from its Oneness, but is really an inexhaustible diverse display of Unity. It is perfectly logical, natural, and a matter of course to the self-vision and self-expression of the Infinite Brahman". (The Life Divine - pg. 355).

अर्थात् - "आत्मतत्त्व (ब्रह्म) जंतु, पक्षी, पशु के मनुष्य ना विविध रुपो धारण करे छे. परंतु आ

परिवर्तनो मां ए पोते अपरिवर्तित रहे छे. (जेवी रीते सोना नी लगडीमां थी दागीना मां रुपांतरित थवा छतां तेमां सोनु अकबंध रहे छे), कारण के ए पोते एकरुप होईने अनेक रुपे प्रकट थाय छे. आपणा मनने एम लागे छे के अनेकता भर्या रुपो केवळ बाह्य देखाव के अवास्तविक होय, (जेम मायावादीओ माने छे), परंतु ऊंडाणपूर्वक जोवाथी समजाशे के विविध रुपो वास्तविकता ना ज बनेला छे. जेम सफेद रंग मां थी अनेकानेक विविध रंगो पेदा थाय छे (उदा. मेघधनुष). आपणने एकता तूटी पडती होय तेम लागे त्यारे पण खरेखर एवा मां अनेकतानो अखुट भंडार भरेलो होय छे. आज सृष्टि नी लीला छे. ते तर्कशुद्‌ध, स्वाभाविक तथा अनंत नो नक्कर आत्मानुभव छे".

'नथी लागतुं महर्षि अरविंद श्रीवल्लभाचार्यजी नी वाणी बोली रह्या होय ! (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

* "शुद्‌धाद्‌वैत विचारधारा अने महर्षि अरविंद" (१६) *

****

श्रीवल्लभाचार्यजीए ब्रह्म नी 'रुपलीला अने 'नामलीला' नो उल्लेख तेमना निबंध ना शास्त्रार्थ प्रकरण मां कर्यो छे - रुपनाम विभेदेन (का-१), अने "सर्व रुपत्वान्नामलीला विभेदतः" (का-९). आनो खुलासो श्रीपुरुषोत्तमजीए शास्त्रार्थ प्नी 'आवरंण भंग' टीकामां तेमज 'प्रस्थानरत्नाकर' ग्रंथ मां कर्यो छे.

तेमना मते ब्रह्म जगतनी उत्पत्ति ना 'कारण' रुपे प्रकट थाय छे त्यारे ते 'द्रव्य-काल-कर्म-स्वभाव-जीव' तरीके रुपांतरित थाय छे. तेवीज रीते ब्रह्म 'शब्द-ब्रह्म' तरीके व्यक्त थाय छे जेनो नाद, अक्षर, पद, वाक्य रुपे विस्तार थाय छे. आम तेमणे निराकार ब्रह्म नुं साकारत्व प्रमाणित कर्यु छे. (Philosophy of the Vallabh Vedant by K. Narayan)

Endorsing these views Sri AUROBINDO writes - "Our conception of the Infinite is formlessness but everywhere we see forms surrounding us and it can be and is affirmed of the Divine Being that it at once Form and Formless. For here too the apparent contradiction does not correspond to a real opposition ; the Formless is not negation of the power of formation, but the condition for the Infinite's free formation ; for otherwise There would be a single or only a fixity or sum of possible forms in a finite universe. .... Name in its deeper sense is not the worlds by which we describe the object, but the total power, quality, character of the Reality, which a form of things embodies and which we try to sum up by a designating sound, it is a knowable name sense, 'Numen". (The Life Divine - pg. 352).

अर्थात् - 'आपणे समजीए छीए के 'परम तत्त्व' अरुप छे, परंतुं आपणे आजुबाजु अनेकानेक रुपो ज जोईए छीए. दिव्य तत्त्व विशे स्पष्ट रीते मानवामां आवे छे के एकी साथे ते अरुप के सरुप होई शके छे. अहीं ए समजवुं जोएईए के अरुपता रुप नो नकार नथी, परंतु अनंत तत्त्व ने सरुप थवानी स्वतंत्रता मात्र छे. अरुपता वास्तविकता नुं 'आत्म-द्रव्य' छे, जेमां थी सीमित रुपो, सत्ताओ, आकारो उद्‌भवे छे. दिव्यता रुप रहित तेमज नामरहित छे, परंतु पोते नामरुपोने सर्जी शके छे. नाम रुपो 'आत्म-द्रव्य' नी नीपज छे, कोई शून्यमांथी कढायेल मनस्वी तर्क नथी. नाम रुप उपरांत रेखांकन, रंग, आकृति वगेरे नुं पण महत्व

होय वछे. एमां अद्दश्य रहेली वास्तविकता नी अभिव्यक्ति थती होय छे".

महर्षि अरविंद श्रीवल्लभाचार्यजी नी ज वाणी बोली होय तेवुं लागे छे ! (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

* "शुद्धाद्वैत विचारधारा अने महर्षि अरविंद" (१७) *

****

सृष्टि नी उत्पत्ति नी प्रक्रिया समजावतां श्रीवल्लभाचार्यजी निबंध ना शास्त्रार्थ प्रकरण मां कहे छे "ते ब्रह्म ने हुं अनेक रुप धारण करुं, एवी सत्य कामना थई" (का-२७). सर्वनिर्णय प्रकरण मां कहे छे "प्रकृति अने पुरुष बन्ने रुपो धारण करवा परमात्मा जे रुप धारण करे छे तेने 'अक्षरब्रह्म' कहेवाय छे (का-९८). तेणे पोताना आधार स्थानमांथी अव्यक्त 'अक्षरब्रह्म' स्वरुप धारण करी तेमांथी ते पांच स्वरुप - काल, कर्म, स्वभाव, प्रकृति अने पुरुष, मां रुपांतरित थई समग्र व्यक्त सृष्टि रुपे विकास / विस्तार पाम्या छे. आम सृष्टि ना कारण मां 'ब्रह्म'नी पोताना मनमां अनेक रुप थवानी ईच्छा छे.

महर्षि अरविंद तेने 'Supermind' (अतिमनस्) नी संग्या आपे छे, अने तेने सृष्टि नी उत्पत्ति नुं कारण बतावे छे. तेओ कहे छे -

"Supermind is the vast extension of the Brahman that contains and develops. By the Idea it develops the triune principle of existence, consciousness and Bliss out of their individual unity. It differentiates them, but it does not divide. It establishes a Trinity, not arriving like the mind from the three to One, but manifesting the three out of One _ for it manifests and develops _ and yet maintaining them in unity _ for it knows and contains.

The whole process of differentiation by the Real-Idea creative of the universe is a putting forward of principles, forces, forms which contains for comprehending consciousness all the rest of existence within them and apprehending consciousness all the rest of existence implicit within them.......". (The Life Divine -137).

अर्थात् - 'अतिमनस् ब्रह्म नुं आत्मविस्तरण (व्यापक स्वरुप) छे. एणे अविभाज्य ऐक्यमां प्रवर्तमान सच्चिदानंदने सत्-चित्-आनंद रुपे प्रादुर्भूत कर्यु छे. अतिमनसे एमने त्रिरुपता आपी छे, त्रण भिन्नता नथी आपी. आपणुं मन एवुं विचारी शके के एक मां थी त्रण थयां अने त्रण भेगा थई एक थई शके. .. सृष्टि नुं सर्जन करवा सक्षम वास्तविक संकल्प द्वारा भेदो उभा करवानी प्रक्रिया एटले सिद्धांतो, शक्तिओ, अने स्वरुपो ने पेदा करवानी प्रक्रिया... आपणे जाणी शकीए के प्रत्येक स्वरुपमां ब्रह्म निहित छे अने ब्रह्म मां प्रत्येक स्वरुप निहित छे. आवा परिणामे प्रत्येक पदार्थ ना बीज स्वरुप मां विविध शक्यताओनी अनंतता वसेली छे....' वधुमां खुलासो करे छे के अतिमनस् मां कोई विघातक विभाजन नथी, कारण के ग्यान, शक्ति तेमज अस्तित्व मां पोताना मां भेदो रहेला नथी, ए त्रणेय खंडित नथी परंतु अखंड छे, अभेद छे'.

आपणे जोई शकीए छीए के महर्षि अरविंद पण, श्रीवल्लभाचार्यजी प्रतिपादन करे छे तेम, 'सच्चिदानंद रुप अक्षरब्रह्म (तेमना शब्दो मां अतिमनस् - Supermind, ब्रह्म नी ईच्छाशक्ति) सृष्टि नुं 'कारण' बतावे छे, भगवान मां सर्व अने सर्व मां भगवान छे, तेम कहे छे, तथा 'अखंड ब्रह्मवाद' नुं

अनुमोदन करे छे.   (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

* "शुद्धाद्वैत विचारधारा अने महर्षि अरविंद" (१८) *

****

श्रीवल्लभाचार्यजी नी दार्शनिक विचारधारा 'अखंड ब्रह्मवाद' छे. ते सार-गर्भित छे. ते ब्रह्म अने जगत ना वास्तविक तादात्म्य सबंधनुं यथार्थ निरुपण करे छे. ते "एकमेवाद्वितियम्" ब्रह्म ना ऐक्यने खंडित कर्या विना जगतनी विविधतानो समन्वय सिद्ध करे छे. आज हकिकत ने महर्षि अरविंदे पण पोतानी रीते प्रस्तुत करी छे.

उपनिषद ब्रह्म ने 'सच्चिदानंद' कहे छे. तेमां सत्-चित्-आनंद त्रणेय घटको अस्तित्व धरावे छे. ते एकबीजाथी भिन्न / स्वतंत्र नथी, एकरुप (homogeneous) छे. ते त्रणेय स्वयंसंचालित नथी, परंतु परस्पर निर्भर छे. ब्रह्म नुं सदंश रुप चेतना द्वारा चालित थाय छे. ते चेतना सदंश मां संतायेली होय छे. एज वात श्रीवल्लभाचार्यजी निबंध मां कहे छे -"सच्चिदानंद रुपेषु पूर्वयोः अन्यलीनता" (शा.प्र.२९), अर्थात् 'सच्चिदानंद'रुप ब्रह्म मांथी प्रकट थनारा त्रिविध अंशो मां 'सदंश'मां चिदानंदांश अने 'चिदंश'मां आनंदांश' लीन के तिरोहित होय छे.

'सच्चिदानंद' ब्रह्म ज्यारे जगत रुपे परिणमित थाय छे त्यारे तेने तैैतरिय उपनिषद कहे छे तेम "सत्यं ग्यानं अनंतं ब्रह्म" कहे छे.

Endorsing these views Sri AUROBINDO says - "In the Supermind there is no such paralysing division, because Knowledge is not self divided, force is not subdivided, being is not self divided as in the mind ; they are neither broken in themshelves, nor divorced from each other....".

Criticising those who diffentiate, Sri AUROBINDO further adds - "The error in us is to make an umbridgable gulf between God and man, Brahman and the world. That error elevates actual and practical differentiation in being, consciousness and force into an essential division..... Supermind in which all is one being, consciousness, will and delight, yet with an infinite capacity of differentiation that deploys but does not destroy the unity _ in which Truth is the substance, rises in the Idea, comes out in the form and there is one truth of knowledge and will, one truth of self-fulfilling and of Delight". (The Life Divine - pg.139,140)

अर्थात् (संक्षिप्त मां) 'ए त्रणेय खंडित नथी, परंतु अखंड छे, अभेदरुपे छे. आ प्रकारना अभेदने कारणे 'अतिमनस्' मां विचारो तेमज सामसामा संघर्षो जोवा मलता नथी. तत्त्वग्यान, विलक्षण के अनुभूति नी दृष्टिए पण तेना विसंतता देखातु नथी. भूल एटली के भगवान अने माणस, ब्रह्म अने जगत वच्चे खाई उभी करवामां आवे छे, जेथी अस्तित्व, चेतना अने शक्ति नी वच्चे भेद उद्भवे छे, जे वास्तविक नथी. सत्य पोते अस्तित्व रुप छे, संकल्प मां स्फुरित थाय छे, अनेक रुपे धारण करे छे'

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

* "शुद्धाद्वैत विचारधारा अने महर्षि अरविंद" (१९) *

****

महर्षि अरविंद अक्षरब्रह्म मां थी सृष्टि नी उत्पत्ति नी प्रक्रिया ने समजावतां कहे छे -

"This all-containing, all-originating, all-consummatin 'Supermind' as the nature (धर्म) of the 'Divine Being' (पुरुषोत्तम) not indeed on its absolute self-existance (निर्धर्मक), but in its action as the Lord and Creator (सर्जक) of its own worlds. This is the truth of that which we call God (परमात्मा), Obviously this is not the too Personal and limited Deity, the magnified and supernatural Man of the ordinary occidental conception ; for that conception erects a too human Eidolon of a certain relation between the creative Supermind and the ego........The Truth Consciousness (परम सत्य) is everywher present in the universe as an ordinary self-knowledge by which the One manifests The harmonies of the Infinite potential multiplicity". (The Life Divine - pg. 141)

अर्थात् - 'समग्र सृष्टि नुं नवनिर्माण करनार तेमज तेने पूर्णता बक्षनार 'अतिमनल्' (अक्षरब्रह्म)ने आपणे 'दिव्य तत्त्व' एटले के ब्रह्म ना धर्म तरीके गणवु पडशे ; ब्रह्म नो निर्पेक्ष धर्म नहीं परंतु गतिशील स्वभाव जे विश्व नुं सर्जन करे छे. आपणे आ सत्यनेज 'भगवान' कहिये छीए. एटलुं साचुं छे के भगवान कोई मर्यादित अस्तित्व नथी के कोई अपवाद रुप अतिप्राकृतिक व्यक्ति -महामानव नथी. ज्यारे ब्रह्म गतिशील बने छे त्यारे तेनामां वैयक्तिक तेमज अवैयक्तिक (personal & impersonal) गुणो होय छे... 'परम तत्व' विश्वमां सर्वत्र व्याप्त छे. पोते नियमनकारी आत्मग्यान रुप होई समग्र विश्व नी विविध तेओमां संवादिता स्थापे छे.

श्रीवल्लभाचार्यजीना मते पण सर्व-व्याप्त 'अक्षरब्रह्म' मूल रुप धर्मी स्वरुप पुरुषोत्तम नो 'धर्म' छे, तेमज अक्षरब्रह्म धाम अने पुरुषोत्तम धामी छे. अनेक रुप थवानी इच्छा थता ब्रह्म गतिशील थई सृष्टि रुपे विस्तरे छे, जेनो खुलासो तेमणे निबंध ग्रंथ मां कर्यो छे. (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

* "शुद्धाद्वैत विचारधारा अने महर्षि अरविंद" (२०) *

**.

"श्रीवल्लभाचार्यजी भगवान नुं माहात्म्य-ग्यान समजावतां कहे छे -"एवं सर्वं ततः सर्वं स ईति ग्यानयोगतः" (निबंध- शा.प्र. १०१), अर्थात् भगवान थकी सर्व छे, अने ए भगवान सर्वरुप छे. समस्त विश्व भगवान मां समाहित छे, जेनी प्रतीति भगवान श्रीकृष्णे अर्जुन ने विराट स्वरुप दर्शन वखते तेमज माता यशोदाजी ने 'मुख 'दर्शन' करावतां (जृंभण लीला) करावी हती. तथा आ विश्वमां नाम-रुप-कर्म पण तेओज बनेला छे.

आ हकिकत नो खुलासो करतां महर्षि अरविंद पण कहे छे - "The first operative principle of the Divine Supermind is that it is a cosmic vision which is all-comprehencive, allpervading, all-inhabiting. Because it comprehends all things in Being and static self awareness, subjective, timeless, spaceless (देश-काल अपरिच्छिन्न), therefore it comprehends all things in dynamic knowledge and governs their objective self- embodiment in Space and Time."

अर्थात् - अतिमनस् (अक्षरब्रह्म) नुं स्वरुप एवुं वैश्विक दर्शन छे, जे सर्व-व्यापी छे, सर्व मां समाविष्ट छे, अने सर्व ने पोताना मां समाविष्ट करनारुं छे. (केटलुं साम्य - यथार्थ वर्णन !) ए अस्तित्व ना दरेक पदार्थ ने एना आत्मबोध नी स्थिति मां देश-काल अपरिच्छिन्न होवा ने कारणे बधा पदार्थो ने एमना वस्तुलक्षी सर्जन स़्वरुपे देश-काल मां परिच्छिन्न अवस्था मां समजी शके छे.

Sri AUROBINDO adds further - " In the Consciousness, the Knower, the Knowledge and the Known are not different but fundamentally one". अर्थात् - अक्षरब्रह्म चेतना मां ग्याता, ग्यान अने ग्येय मूलतः अभिन्न होय छे.

वळी 'सत्कार्यवाद' ना सिद्धांत ने अनुमोदन आपतां महर्षि अरविंद कहे छे - "A tree evolves out of the seed in which it is already contained, the seed out of the tree ; a fixed law, an invariable process reigns in the permanence of the form of manifestation which we call a tree." (The Life Divine - pg 146, 147).

अर्थात् - बीजमां थी वृक्ष पेदा थाय छे, परंतु ए बीजमां वृक्ष प्रथम थीज रहेलुं हतुं ज. पछी वृक्ष मां थी पाछुं बीज पेदा थाय छे. आपणे जे सर्जन ने वृक्ष तरीके एळखीए छीए ते सर्जन मां एक अफर नियम रहेलो छे.

'सत्कार्यवाद' - के "कार्य कारणमां पूर्व निहित होय छे", ते सांख्य दर्शन नो सिद्धांत छे , जेने श्रीवल्लभाचार्यजी ए मान्य गण्यो छे. तेथी तेमना मते जगत प्रकट न हतुं त्यारे पण तेनुं ब्रह्म मां अस्तित्व हतुं ज. तेथी जगत उत्पन्न नथी थतुं, तेनो 'आविर्भाव' थाय छे. प्रलय समये जगत नो नाश नथी थतो, परंतु तेनो 'तिरोभाव' थाय छे, तेम तेओ समजावे छे. (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

* "शुद्धाद्वैत विचारधारा अने महर्षि अरविंद" (२१) *

****

श्रीवल्लभाचार्यजी भागवत महापुराण नो शास्त्रार्थ समजावतां कहे छे के 'आनंदरुप श्रीहरि नी लीला ए श्रीभागवत शास्त्र नो अर्थ छे'. तेमां भगवानननी दश-विध लीलाओ नुं निरुपण छे, जे सृष्टि नी उत्पत्ति-स्थिति-लय नुं वर्णन करे छे. श्रुति कहे छे तेम भगवाने निजानंदनो अनुभव करवा पोतानी ईच्छा अने सामर्थ्य थी तेओ सृष्टि रुप बन्या छे.

आपणे जाणिये छीए के भगवान 'सच्चिदानंद' स्वरुप छे. तैत्तरिय उपनिषद कहे छे - "आनंदो ब्रह्मेति व्यजनात्। आनंदाद्धयेव खल्विऩमानि भूतानि जायन्ते। आनंदेन जातानि जीवन्ति। आनन्दं प्रयन्त्यभिसं विशन्तीति।" अर्थात् 'आनंद' एज ब्रह्म छे. आनंद मां थी आ प्राणिओ जन्मे छे, आनंद वडे ज जन्मेला जीवे छे, अने अंते आनंद तरफ ज जाय छे अने तेमां अंते लय पामे छे. (३.६.१)

Sri AUROBINDO also explain this phenomenon in his words thus -

"All existence is one Being whose essential nature is Consciousness, one Consciousness whose active nature is Force or Will ; and this Being is Delight (Anand), this Consciousness is Delight, this force or Will is Delight. Eternal and inalienable Bliss of Existence, Bliss of Consciousness, Bliss of Force .... this is God."

(आनंद मात्र करपाद मुखोदरादि, श्रीवल्लभाचार्यजी कहे छे !)

He adds - "It possesses or rather becomes the delight of the play of existence, the play of consciousness, the play of Force and will. That play is Universe. and that Delight is the sole cause, motive and object of cosmic existence". (The Life Divine - pg.152)

अर्थात् - 'सर्व अस्तित्व एक तत्त्व रुप छे, जेनो मूळ स्वभाव छे चेतना, अने ए चेतनानो कार्यान्वित स्वभाव छे शक्ति अने ईच्छा. आ सत्, चित् अने शक्ति तेमज ईच्छा परमानंद मय छे. अस्तित्व नो आ शाश्वत अने अभेदरुप परमानंद सर्जनशील के असर्जनशील अवस्था मां ईश्वर पोतेज छे'.

'ईश्वरनी ए लीला एटले विश्व नुं सर्जन अने सर्जननो आनंद एज मात्र हेतु अने ध्येय. दिव्य चेतना मां आ लीला समाविष्ट छे'.

"नथी लागतुं के महर्षि अरविंद श्रीवल्लभाचार्यजी नी शुद्धाद्वैत विचारधारा ने संपुर्ण पणे अनुमोदित करी रह्या छे !". (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

* "शुद्धाद्वैत विचारधारा अने महर्षि अरविंद" (२२) *

****

Sri AUROBINDO elaborates further saying -

"This is the nature of the Divine Consciousness which creates in itself all things by a movement of its Conscious-force and governs their development through a self-evolution by inherent knowledge-will ot the truth of existence or real-idea which has formed them. The Being that is conscient is what we call God ; and He must obviously be Omnipresent, Omniscient, Omnipotent, for all forms are forms of His Conscious Being created by its force of movement in its own existence as Space and Time ; Omniscient, for all things exist in His Consciousness, are formed by it and possessed by it ; Omnipotent, for this all-possessing Consciousness is also an all-possessing Force and all-possessing Will". (The Life Divine - pg. 155)

अर्थात् -'आ दिव्य चेतना के जे पोताना चेतन शक्ति द्वारा पदार्थो ने पेदा कररीने पोताना अंगभूत ग्यान द्वारा प्रकट थाय छे, तेने आपणे ईश्वर तरीके मानिये छीए. ईश्वर निःशंकपणे सर्व व्यापक छे, कारण के बधा रुपो एमनी चेतना मां थी उत्पन्न थया छे ; वळी ए सर्वग्य छे कारण के एमनी चेतना मां हयाती धरावे छे ; वळी ए सर्व शक्तिमान पण छे, कारण के एमनी सर्वस्पर्शी चेतना पोते शक्ति अने दिव्येच्छा धरावे छे. ईश्वर नी शक्ति अने ईच्छा एकरुप होय छे, कारण के ते 'सर्व संवादी ग्यान मां थी

उद्‌भवे छे..... अतिमनस् (अक्षरब्रह्म) नुं अस्तित्व अखंड होवाथी तेनी शक्ति पण विस्तरणमां अखंडज होय छे. ते कोई एक स्वरुप के स्थिति मां मर्यादीतता (देश-काल परिच्छिन्न) बनतुं ऩथी.'

श्रीवल्लभाचार्यजी पण एज वात समजावे छे के 'सच्चिदानंद' अक्षरब्रह्म नी चेतना मांथी व्युच्चरित थयेला नाम-रुपात्मक अंशो ब्रह्म नी भीतर ज उत्पन्न थाय छे कारण के ब्रह्म नी बहार कांइ संभवित होई शकतुं नथी. (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

∗ "शुद्‌धाद्‌वैत विचारधारा अने महर्षि अरविंद" (२३) ∗

****

श्रीवल्लभाचार्यजी निबंध ना शास्त्रार्थ प्रकरण मां समजावे छे - "अनंत मूर्ति तद् ब्रह्म हि अविभक्तं विभक्तिमत्" (का.२६), तेमज "तदिच्छा मात्रतस् ब्रह्म भूतांशचेतनाः"(का-२७), अर्थात् _ 'ब्रह्म ज पोते असंख्य मूर्त (परिच्छिन्न) रुपो ने धारण करीने अनंत विभागोमां एक अविभक्तं बनी गयो छे' वळी कहेछे -'केवळ तेनी ईच्छा ने कारणे ज ब्रह्मात्मक असंख्य आंशिकी चेतना प्रकट थयीछे.'

आनो विस्तार पूर्वक खुलासो महर्षि अरविंदे कर्यो छे. तेओ कहे छे -

"Brahman in essence is Consciousness which measures, limits, cuts forms of things from the individual whole and contains them as if each were a seperate integer. Even what exists only as obvious parts and fractions...... All its action and enjoyment deal thus with wholes that form part of a greater whole, and these subordinate wholes again are broken up into parts which are also treated as wholes for that the particular purposes they serve."

अर्थात् - 'ब्रह्म अखंड मां थी खंडभूत रुपो धारण करे छे. ते पोताने स्वतंत्र चेतना धरावतां अखंड रुपोमां खपावे छे, केमके एनेतो पोतानी अखंडतानुं ग्यान होय छे. ब्रह्म स्वयं एक उपकरण होय तेम पोताने कार्य मां प्रयोजे छे (अर्थात् निमित्त कारण पण पोतेज बने छे), अने लीला करे छे.

Sri AUROBINDO says - "It cuts up being into wholes, intu ever smaller wholes, into atoms and those atoms into primal atoms, until it would, it could, dissolve the prial atom into nothingness".

अर्थात् 'ब्रह्म पदार्थो ने एटली हदे विभाजित करी शके छे के पदार्थ पोतानी हयाति खोइ बेसे..... वास्तवमां क्यांय कोई भिन्न रुपो छे नहीं, परंतु चेतना नुं ओछुं वत्तु घनीकरण के केंद्रीकरण छे. आपणे नानामां नानो अणुं लईए के मोटा मां मोटुं नभोमंडळ लईने एने तपासिए तो ए बन्ने मां शाश्वत शक्ति चेतना द्‌वारा पेदा थयेला रुपोज जोई शकीशुं." (The Divine Life -pg 173-174).

आपणे जोई शकीए छीए के एक या बीजी रीते महर्षि अरविंद "ब्रह्मवाद" नुंज प्रतिपादित करे छे! (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

∗ "शुद्‌धाद्‌वैत विचारधारा अने महर्षि अरविंद" (२४) ∗

****

श्रीवल्लभाचार्यजी जगत नुं स्वरुप समजावतां निबंधमां कहे छे - "प्रपंचो भगवत्कार्यस् तद् रुपो मायया अभवत्" (शा.प्र.२३). अर्थात् प्रपंच एटले जगत माया द्वारा निर्मित भगवान नुं 'कार्य' छे. आथी स्पष्ट छे के भगवान जगतनुं 'कारण' छे, जेमणे पोतानी 'सर्वभवनसामर्थ्य' रुपा 'माया' द्वारा रच्यु छे. अहीं 'माया' शब्द जे अर्थ मां मायावादीओ माने छे, ते नथी.

Endorsing this fact Sri AUROBINDO writes - "God created the world in Himself through 'Maya' ; but the Vedic meaning of Maya is not illusion, it is wisdom, knowledge, capacity, wide extension in Consciousnesse. 'Prajna prastut purani'. Omnipotent Wisdom created the world, it is not organised blunder of some Infinite Dreamer ; Omniscient Power manifests or conceals (आविर्भाव - तिरोभाव) it in itself or Its own Delight (आनंद) , it is not bondage imposed by His ignorance on the free and Absolute Brahman".

जेओ जगत ने मिथ्या / भ्रांति मात्र गणे छे, तेमनी आलोचना करतां उमेरे छे - "Buddha and Shankar supposed the world to be radically false and miserable ; therefore escape from the world to them the only wisdom. But the world is Brahman, the world is God. The world is Satyam, the world is Anand ; it is misleading of the world through mental egoism that is falsehood and our wrong relation with God in the world that is misery. There is no other falsity and no other cause of sorrow." (The Hour of God - by Aurobindo).

केटली यथार्थ हकिकत ! जे श्रीवल्लभाचार्यजी पण प्रतिपादित करे छे ! (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

* "शुद्धाद्वैत विचारधारा अने महर्षि अरविंद" (२५) *

****

AND Sri AUROBINDO clarifies further saying - "It does not follow that the world is in or has no existence worth the name. None of the ancient Scriptures of the Hinduism affirms the unreality of the world, nor is it logical consequences of the great but remote and difficult truth wordsso inadequate to express. We must remember that all these terms, Maya, illusion, dream, unreality, relative reality, conventional value, are merely 'Verble figures and MUST not be pressed with atio literal scholastic or logical indistance."

He further adds - "Illusion is itself illusion. That which seems to soul escaping from ignorance to be Maya, an illusion or dream, is seen by the soul already free to be 'Lila of God'. From this standpoint, certain great metaphysical minds (अहीं श्रीशंकराचार्यजी प्रत्ये इशारो करे छे), not perceiving sufficiently that word 'Lila', have condemned the whole world as a miserable and lying dream, all the more hateful and profitless for a certain element of ineffugable reality which the clearsighted part of their minds was compelled to realise and admit." (The Hour of God - Sri Aurobindo)

अहीं स्पष्टपणे जोइ शकाय छे के महर्षि अरविंद श्रीशंकराचार्यजी तेमज अन्य मायावादी विचारको जे 'जगत' ने माया जनित, भ्रांति, स्वप्नवत् इत्यादि माने छे, तेमनी मान्यताओ नो उच्छेद करे छे, एटलुंज नहीं परंतु तेने भगवान नी 'लीला' न जोवाने असमर्थ बतावे छे. जे बाबतो विशे श्रीवल्लभाचार्यजीए अणुभाष्य इत्यादि ग्रंथो मां अनेक प्रमाणो साथे सिद्ध करी छे अने मायावादनुं खंडन कर्यु छे, ते सर्वे नुं श्रीअरविंद संपुर्ण अनुमोदन करे छे.

आम श्रीवल्लभाचार्यजीना पछी पांचसो वर्ष पछी कोई अन्य चिंतक जो स्वतंत्रतया वेदोपनिषद नुं अर्थघटन करी तेमना 'दार्शनिक विचारो' ने अनुमोदित करे छे, ते तेनी यथार्थता ने प्रमाणित करे छे. (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

* "शुद्धाद्वैत विचारधारा अने महर्षि अरविंद" (२६) *

****

जगत ना अस्तित्व विशे विभिन्न विचारधाराओ प्रवर्ते छे - सांख्य दर्शन माने छे के ते प्रकृति-पुरुष द्वारा निर्मित थयेलु छे, न्याय-वैशैषिक दर्शन ते परमाणुओथी बनेलुं माने छे, तो मींमांसको नी दृष्टि थी ते कर्मफल भोगववानी व्यवस्था छे. वळी मायावादीओ ना मते ते माया-जनित छे. श्रीवल्लभाचार्यजी आ बधा खुलासा ने नकारतां नथी परंतु 'अर्धसत्य' कहे छे, कारण के शब्दब्रह्म रुप वाणी मात्र ब्रह्म विषयक ज वर्णन करे छे. "तेथी ज तेओ निबंध ना खुलासो करे छे - "सर्ववादानवसरं नानावादानुरोधित". (शा.प्र.७०) _ बधाज वादो ब्रह्म नुंज निरुपण करे छे.

Endorsing this fact Sri AUROBINDO says - "We experience spirituality that the universe is the nature of manifestation proceeding as it were from the Absolute.; but all these words and phrases are merely intellectual terms trying to express the inexpressible. We must state what we as best as we can, but need not dispute what others see or state ; rather we accept and in our own system locate and account for what they have seen and stated ...... A philosophical system is only statement of that arrangement of existence in universe which God has revealed to us as our state of being"

HOW MUCH SIMILAR VIEWS !

He adds further - "The world exist as symbols of Brahman ; but the mind creates or accepts false value of tge things and takes symbols for essential reality. This is ignorance or cosmic illusion, the mistake of mind and senses, from which the Magician Himself, Master of the Illusion is calling to escape. This false valuation of the world is Maya if the Gita and can be surmounted without abundaning either action or word-existance". (The Hour of God - Aurobindo). (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

∗ "शुद्धाद्वैत विचारधारा अने महर्षि अरविंद" (२७) ∗

****

मायावादीओ जगत ने मात्र 'माया' कही नकारे छे, मिथ्या कहे छे, तदर्थ तेने छोडवानी उपदेश आपे छे, तेनी विरुद्ध महर्षि अरविंद माया ना स्वरुप ने जे अर्थ मां समजावे छे ते श्रीवल्लभाचार्यजी ना दृष्टिकोण ने अनुमोदन आपे छे. माया वास्तवमां ब्रह्म नी 'सर्वभवन सामर्थ्य' रुपा शक्ति छे, जेनो उल्लेख भागवतमां पण मळे छे (भगवान नी बार शक्तिओ मां नी एक 'माया' छे). तेथी ते भगवान साथे जोडायेल छे, अने भगवाननी ईच्छानुसार कार्य करे छे. आ माया एज भगवान नुं 'कर्तुम-अकर्तुम-अन्यथा कर्तुम्' सामर्थ्य छे .

Endorsing this point of view, Sri AUROBINDO says - ∗Still world is Maya because it is not the essential truth of infinite existence, but only a creation of self-consciousness being _ not a creation in void, ot creation in nothing and out of nothing, but in the eternal Truth of that Self-Being ; its continent, origin and substance are the essential, Real Existence, its forms are mutable formation by Its own creative Consciousness-Force. They are capable of manifestation (कर्तुम्), non-manifestation (अकर्तुम्), and other manifestation (अन्यथा कर्तुम्). (The Divine Life -pg. 110).

अर्थात् - महर्षि अरविंद समजावे छे के जगत 'माया' छे, परंतु ए अवास्तविक के बिनअस्तित्व नथी. जगत वास्तविक हयाति धरावे छे, शाश्वत छे. आपणने जगतनुं कोई रुप दृष्टि मांथी अलोप थतुं देखाय, परंतु जगतनो हरकोई पदार्थ एक रुपमां थी बीजामां रुपांतरित थाय छे, परंतु तदीय समुळगो नाश पामतो नथी. पदार्थ नुं रुप हयात न रहे परंतु एनी हयाती शाश्वत रहे छे. बाह्य देखाव मां रहेली शाश्वत परिवर्तनशीलता मां शाश्वत अपरिवर्तनशीलता रहेली छे. तेनामां प्रकट थवानुं, न प्रकट थवानुं के अन्यथा प्रकट थवानुं सामर्थ्य रहेलुं छे.

आपणे जोई शकीए छीए के "केटली समांतर विचारधारा !". (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

∗ "शुद्धाद्वैत विचारधारा अने महर्षि अरविंद" (२८) ∗

****

श्रीवल्लभाचार्यजी जगत ने भगवान नी 'आनंदमयी लीला' कहे छे. अणुभाष्य मां कह्यु छे - "लोकवत्तु लीला कैवल्यम्" (२.१.३३). जेम लोकमां निर्दोष आनंद मेळववा खेल खेलवामां आवे छे तेज प्रकारे जगत ना रंगमंच पर आ ब्रह्म नी 'लीला' छे. निबंध ना मंगलाचरणमां पण कहे छे - "जगत क्रीडती यो यतः".

तैत्तरिय उपनिषद पण समजावे छे - "आनंदाद्धयेव खल्वमानि भूतानि जायन्ते, आनन्देन जातानि जीवन्ति, आनन्दं प्रयन्त्यभिसं विशंतीति".(३.६.१), अर्थात् - 'आनंदमांथीज आ प्राणिओ जन्मेला छे, आनंद वडे ज जन्मेला जीवे छे, अने अंते आनंद तरफ ज जाय छे अने एमां लय पामे छे.

आज हकिकत ने महर्षि अरविंद पोतानी रीते आम व्यक्त करे छे -

Sri AUROBINDO explains - "Delight is the existence, Delight is the secret of creation, Delight is the root of birth, Delight is the cause of remaining in existence, Delight is the end of birth and that into which creation ceases". अर्थात् -'आनंद पोते अस्तित्व छे, सर्जन नुं रहस्य छे, सर्जन टकावी राखवानुं कारण छे'.

He further adds - "If we look at World-Existance rather in its relation to the Self Delight of eternally existent being, we may regard, describe and realise it as 'Lila', the plat, the child's play, the poet's joy, the actor's joy of the Soul of things eternally young, perpetually inexhaustible, creating and recreating Himself in Himself for the sheet Bliss of self-recreation, of that self -representation, _ Himself the play, Himself the player, Himself the playground".

Further He explains - "These three generalisations of the play of existence in its relation to the eternal and stable, the immutable Sachchidanand, with conception of Maya, Prakruti an Lila and representing themselves in the philosophical systems as mutually contradictory philosophies are in reality perfectly consistent with each other". (The Life Divine - pg.111)

अर्थात् - 'आ दृष्टि थी जगत ब्रह्म नी लीला मात्र छे, जे पोतानी प्रसन्नता माटे रचवामां आवे छे. एम कही शकाय के पुरुष नी लीला शक्ति नी गति मां प्रवर्तित थाय छे. जगतने आपणे एवा मां वसेला शाश्वत तत्त्व ना संदर्भ मां जोईए तो पण आपणने एकता लीला ना रुपमां देखाशे, जेमां आत्मा पोतानी जातमां पोताना सर्जन ना आनंद खातर पूनः पेदा करे अने रमत रुपे पोतेज, पोतेज रमनार अने पोतेज जाणे रमतनुं मेदान बनी रहे छे. माया, प्रकृति अने लीला नी दृष्टि थी अस्तित्व ना शाश्वत तारतम्यो भले परस्पर विरोधी देखाता होय परंतु वास्तवमां जीवन अने जगतनी समग्रतानी दृष्टि ए परस्पर पूरक छे'.

'लीलावादनुं केटलुं यथार्थ दर्शन ! (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

* "शुद्धाद्वैत विचारधारा अने महर्षि अरविंद" (२९) *

****

श्रीवल्लभाचार्यजीनी शुद्धाद्वैत विचारधाराना पायामां ब्रह्मवाद, सत्कर्मवाद, अविकृतपरिणामवाद, तादात्म्यवाद इत्यादि सिद्धांतोनी माफक 'लीलार्थसृष्टिवाद' पण छे. तद्विषयक तेमणे पोताना विभिन्न ग्रंथो मां चर्चा करी छे. तेज प्रमाणे महर्षि अरविंदे पण खुब विस्तार पूर्वक ए विशे समजाव्यु छे.

Elaborating further Sri AUROBINDO says - "Such then is the view of the universe which arises out of the integral Vedantic affirmation. An infinite indivisible existence all-blissful in its pure self-consciousness moves out of its fundamental purity into the varied play of Force that is Consciousness, into the movement of Prakruti which is the play of Brahman".

Sri AUROBINDO says that "One without second Reality takes the Delight in such movement because all possibilities are inherent in Its infinity and the delight of its existence.

Further He adds - "Thigh all this play the Reality is always one and the same Delight of existence. _ the same in the delight of the subconscious mind ...... and in the delight of the eternal super conscient self-possession into which the individual must wake and there become one with the indivisible Sachchidanand. This is the play of the One, the Lord, the All as it reveals itself to our liberated and enlightened knowledge from the conceptive standpoint of this material universe. (The Life Divine - pg. 118, 119).

अर्थात् - वेदांत प्रमाणे अविभाज्य अनंत 'परम तत्त्वे' पोतानी विशुद्ध चेतना ने क्रियाशील बनावी ने विश्व ना विविध स्वरुपे मां विभाजित करी छे अने ए रीते प्रकृति नुं सर्जन करी ने ब्रह्मे पोतानी लीला आदरी छे.' वधुमां खुलासो करे छे के 'एकमेवाद्वितियम्' परम अस्तित्व नो विविध स्वरुपो धारण करवानो अने आनंद लेवानो तेनो स्वयंभू स्वभाव छे.' महर्षि अरविंद कहे छे के ' मानवे ते परमानंद ने माणवा माटे तेणे एक व्यक्ति तरीके नुं अलायदापणुं भूलीने वैश्विक्तामां भळी जवुं जोईए, पोतानी संकुचित मनोदशामनुं उर्ध्विकरण करीने तेने परम चेतना मां स्थापित करवी जोईए. आ भौतिक विश्वमां प्रभु मुक्तात्माओ तथा प्रबुद्ध मानवो माटे आनंद प्रकट करता ज होय छे. (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

* "शुद्धाद्वैत विचारधारा अने महर्षि अरविंद" (३०) *

****

केटलीक दार्शनिक विचारधारा जगत ना अस्तित्व माटे एम माने छे के ते 'आकस्मिक रीते (by accident - Accidentalism) अस्तित्व मां आवेलुं छे. विग्यान नी 'Big bang theory' पण एमज प्रतिपादन करे छे. महर्षि अरविंद आ वात तने नकारतां कहे छे -

"मानव परम चैतन्य नो वैयक्तिक आविर्भाव छे अने वर्तमान जीवन दिव्य जीवन बनाववा नुं एनुं भावि सुनिश्चत छे. 'विश्व' कोई आकस्मिक घटना तरीके के कोई हेतुविहीन भ्रम तरीके अस्तित्व मां आव्युं नथी. आ विश्व अने अन्य अगोचर विश्वोमां व्याप्त एवा अगणित नाम, स्वरुपोमां गुप्त रीते वसेल परात्पर चैतन्य प्रकट थयुं छे. चैतन्य ना आ प्रगटीकरणमां विश्वना सर्जन नो अर्थ अने हेतु समायेल छे...... चैतन्यनुं स्फुरण भगवान विष्णु ना सर्वोच्च एवा चरण मां पराकाष्ठा ए पहोंच्यु छे."

"विश्वमां संघर्षात्मक अस्तित्व नी पाछळ थी प्रस्फूटित थतां परम सत्य ने सत्-चित्-आनंद तरीके ओळखवा मां आवे छे. ए अनंत, सर्व-व्याप्त, सर्वग्य, स्वयंभू अने सर्वशक्तिमान छे. समग्र सर्जन करतां पण ए बहेत्तर छे. सर्जन ना स्वरुपो एवुं निरुपण करी शकता नथी. ए सत्य केवळ अंतःस्फुरणा द्वारा के आंतर्दर्शन थी अनुभूत थाय छे. ए स्वयं स्वयं ने जाणे छे. ए अग्येयमां सर्व संनिहित छे....व्यक्ति अने समष्टि ए बे एवा माध्यमो छे जेमां अग्येय तत्त्व अवतरित थाय छे. व्यक्ति अने समष्टि एकबीजा माटे सरजायेल छे"

"Universe is a diffusion of the Divine all in infinite space and time (देश-काल अपरिच्छिन्न), the individual its concentration within limits of space and time (देश-काल परिच्छिन्न)". (The Life Divine pg. 51-52)

श्रीवल्लभाचार्यजी ना मतानुसार 'सच्चिदानंद' ब्रह्मनो अंश 'व्यष्टि अतर्यामि' स्वरुपे व्यक्तिगत जीवात्मा नी साथे रही परमात्मा रुपे तेनो नियामक छे, ज्यारे 'समष्टि अंतर्यामि' तरीके समग्र सृष्टि नुं त्रिगुणात्मक देवो ब्रह्मा-विष्णु-महेश रुपथी तेनुं संचालन करे छे. ए त्रिदेवो अनुक्रमे सृष्टि नी उत्पत्ति-स्थिति- लय माटे नियामक छे. (डॉ. जयेन्द्र सोनी)